समंदर की यात्रा

समंदर की लहर उठती है तो हर कोई उनसे डरता है, कही उन्हें समंदर में खिच ना ले जाए, पर समंदर कैसे कहे की वो अंदर से शांत है, तुम्हें डुबकी तो लगानी पड़ेगी तब तुम समंदर की शांति के महसूस कर पाओगे, बस समंदर यह कहना चाहता है की तुम भी गहरे हो मेरी तरह, आओ मेरे पास में तुम्हें जलक दिखता हु, तुम्हारा मन बिलकुल मेरी तरह है जिसमें लहरे उठती रहती है पर मन एक ऊपरी परत है, तुम मन से कई और गहरे हो, अगर लहरे ना होती तो समंदर की शांति का कैसे पता चलता, ठीक उसी तरह मन में तरंगे ना उठती तो आपको शांति की कामना कैसे हो पाती, इसलिए तुम जब तक ज़िंदा हो समंदर की लहरे तुम्हारे लिए आह्वान है की तुम अपनी गहराई को पा लो, समंदर की लहरे मरे हुवे को बाहर फेंक देती है, वैसे ही मन दूसरों से ली हुई मान्यताओ को बार बार बाहर लाता है, बिलिफ़ सारी मरी हुयी है वो चाहे कोई भी हो, कई सारी बिलिफ़ आपने बाहर से ली हुयी है और कई सारी आपने ख़ुद बनायी है, बस यह बिलिफ़ ही आपका जीवन चलाती है जब तक आप बिलिफ़ से ऊपर ना उठो, इसलिए आप समंदर की यात्रा के लिए संकल्प ले तो समंदर की लहरे आपके लिए मर्गदर्शक बनेगी और अगर आप लहरो से डरते हो तो आप एक पानी के झरने को पकड़ लो, क्योंकि सारे झरने समंदर में ही मिलते है, रोज़ सुबह १५ मिनट परमात्मा के लिए प्रार्थना करो, सिर्फ़ हाथ जोड़ कर बेठ जाओ,,,,बस यही प्रार्थना है। यह झरना आपको पहोचा देगा जहाँ आपको होना चाहिए।

Aasthit